P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-2* May- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति चित्रण

Nature Depiction in Poems of Mahadevi Verma

Paper Submission: 25/04/2021, Date of Acceptance: 10/05/2021, Date of Publication: 12/05/2021

ऋषिपाल
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल, हरियाणा, भारत

सारांश

आधुनिक युग की कवयित्रियों में महादेवी वर्मा का नाम बहुत ही सम्मान एवं प्रमुखता से लिया जाता है। उनका जन्म 26 मार्च, 1907 को फर्रूखाबाद के प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में हुआ। महादेवी वर्मा जी साहित्य के क्षेत्र में बहुत बड़े हस्ताक्षर के रूप में जानी जाती हैं।

The name of Mahadevi Varma is taken with great respect and prominence in the poems of the modern era. She was born on 26 March 1907 in the prestigious Kayastha family of Farrukhabad. Mahadevi Varma remains as an iconoclast in the field of literature.

मुख्य शब्द : महादेवी वर्मा, गद्य लेखिका, कविता, प्रकृति।
Mahadevi Varma, Prose Writer, Poetry, Nature.

प्रस्तावना

महादेवी वर्मा जी को केवल कविता के क्षेत्र में ही प्रसिद्धि प्राप्त नहीं, बल्कि गद्य लेखिका के रूप में भी इनको सशक्त साहित्यकार के रूप में जाना जाता है। रेखाचित्रकार के रूप में इनका गद्य के क्षेत्र में विशेष स्थान है। इन्होंने हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'चाँद' के सम्पादक के दायित्व का भी निर्वहन किया है। महादेवी वर्मा को राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' के सम्मान से अलंकृत किया जा चुका है। लेखक जैसे कमतर साहित्य के विद्यार्थी के लिए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालना, विशेषकर उनके प्रकृति चित्रण पर सूरज को दीपक दिखाने के समान है। ऐसा भी माना जाता है कि हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा जी का पदार्पण चौथे स्तम्भ के रूप में हुआ है। प्रसिद्ध विद्वान नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या है।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य महादेवी वर्मा के कृतित्व पर, विशेषकर उनके प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालना है।

साहित्यावलोकन

विश्व स्तरीय शोध–पत्रिका UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL में पूनम शर्मा के शोध–पत्र ''महिला रचनाकारों के संस्मरण : एक विवेचन'' शोध अंक 53, जनवरी–मार्च 2021 में पृष्ठ संख्या 243 ''स्मृति की रेखाएँ, संस्मरण को सामान्य अर्थ में सम्यक् स्मरण ही कहा जा सकता है। 'स्मृति की रेखाएँ' संस्मरण में महादेवी वर्मा जी ने भक्तिन, चीनी फेरीवाला, जंग बहादुर, मुन्नू, ठकुरी बाबा, बिबिया गुंगिया आदि पात्रों पर उनके जीवन चरित्र की स्मृतियों को संस्मरण के माध्यम से रूपांतरित किया है। इसी प्रकार 'शोध दिशा' शोध अंक 51, अक्टूबर–दिसम्बर 2020 में डॉ॰ दीपक कुमारी ने शोध–पत्र ''महादेवी वर्मा और स्त्री का आर्थिक सशक्तिकरण'' में वे लिखती हैं कि ''सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, स्त्री जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने पहली बार हिन्दी साहित्य को दिए हैं। 'शोध पत्रिका' के शोध अंक 45, जून 2019 में डॉ॰ रीता कुमारी द्वारा रचित शोध पत्र ''महादेवी वर्मा का जीवन और साहित्य'' में वे लिखती हैं – ''महादेवी का बहुविध साहित्य उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए यथेष्ट है। यद्यपि, छायावाद प्रकृति को चित्रशाला कहा जाए, तो महादेवी छायावाद की अमर चित्रकार ठहरती हैं। इस क्रम में काव्य को क्रमिक जीवन का उन्नयन माना जाए तो गद्य को उनके जीवन का विस्तार तथा बाल साहित्य को उनके बचपन का विकास मानना उचित ठहरता है।''

विषय विस्तार

अनेक विद्वान छायावाद के दूसरे स्तम्भ के रूप में वड्र्सवर्थ की तुलना प्रकृति के निपुण, सशक्त, कुशल चितेरे सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत से करते हैं। बहुत से साहित्यकार, समीक्षक, आलोचक छायावाद और रहस्यवाद के मध्य कोई भेद नहीं मानते। रहस्यवाद के सन्दर्भ में जयशंकर प्रसाद लिखते हैं कि ''विश्व सुंदरी प्रकृति में चेतना का आरोप संस्कृत वाङ्मय मे प्रचुरता से उपलब्ध होता है। वर्तमान हिन्दी में इस अद्वैत रहस्यवाद की सौन्दर्यमयी व्यंजना होने लगी है। वह साहित्य में रहस्यवाद का स्वाभाविक विकास है।''[2] महादेवी वर्मा मानती हैं कि ''छायावाद की प्रकृति, घटकूप आदि से भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महान प्राण बन गई है। अतः अब मनुष्य के अश्रु मेघ के जलकण और पृथ्वी के ओस बिन्दुओं का एक ही कारण, एक ही मूल है।''[3] आचार्य नंददुलारे वाजपेयी महादेवी वर्मा के प्रकृति प्रेम के बारे में लिखते हैं कि – ''करूणा को प्रकृति प्रेम के साथ मिलाकर जो चित्र बनता है, वही महादेवी वर्मा के जीवन और काव्य का आलंबन माना जाता है। वह जितनी एक सफल कवयित्री के रूप में जानी जाती हैं, उतनी ही एक कुशल चित्रकार के रूप में। इसलिए तो उनके काव्य में प्रकृति के नानाविध चित्र देखने को मिलते हैं। पशु–प्रेम और मानव जीवन की कारूणिक अभिव्यक्ति तो उनकी विशेषता ही कही जाती है। एक ओर जहां प्रकृति के नैसर्गिक वातावरण में मुक्त हास बिखेरती हैं, वहीं निशा की मधुर वेला में नैश राग 'विहाग' गाती हैं।''[4]

महादेवी वर्मा ने अपनी साहित्यिक यात्रा में प्रकृति को यथासम्भव, यथोचित स्थान दिया है। उन्होंने जिस पहचान को साहित्य साधना के क्षेत्र में बनाया है, वहां तक पहुंचने में प्रकृति का साहचर्य उनकी सोच व अभिव्यक्ति में समाहित रहा है। महादेवी वर्मा स्वयं छायावाद और प्रकृति के सन्दर्भ में लिखती हैं कि – ''छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब–प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट, कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई, अतः अब मनुष्य के अश्रु, मेघ के जल कण और पृथ्वी के ओस बिन्दुओं का एक ही कण, एक ही मूल्य है।''[5]

महादेवी वर्मा प्रकृति में ही स्वयं का प्रतिरूप भी देखती हैं। ऐसा नहीं है कि इस प्रकार की अनुभूति केवल महादेवी वर्मा की ही रही हो, समस्त छायावादी कवियों ने भी ऐसा ही माना है। उनका मानना है कि प्रकृति धरती पर सभी प्राणियों व विशेषकर संवेदनशील कवियों के हृदय का अभिन्न अंग बन जाती हैं। महादेवी वर्मा के काव्य में इस प्रकार प्रकृति के साथ तादात्म्य के उल्लेख अनेक बार दिखाई पड़ते हैं। प्रस्तुत कविता में संध्या से तुलना करती हुई कवयित्री कहती हैं कि –

''प्रिय सान्ध्य गगन, मेरा जीवन!
यह क्षितिज बना धुँधला विराग,
नव अरुण अरुण मेरा सुहाग,
छाया–सी काया वीत राग,
सुधि भीने स्वप्न रंगीले घन,
साधों का आज सुनहलापन,
गिरता विषाद का तिमिर गहन,
संध्या का नभ से मूक मिलन –
यह अश्रुमती हँसती चितवन।''[6]

उपरोक्त पंक्तियों में कवयित्री ने सन्ध्या के आकाश को ही अपना जीवन मान लिया है। क्षितिज को अपने जीवन का वैराग्य मानती है। सूर्य की लालिमा को कवयित्री अपना सुहाग मानती है। बादलों को स्वप्न मानती है। इस प्रकार उपरोक्त प्रकृति को महादेवी वर्मा अपना सर्वस्व मानते हुए स्वयं को प्रकृति का स्वरूप मानती है। इसी प्रकार अनेक अवसरों पर जैसे – ''मैं बनी मधुमास आली'[7] 'मैं नीर भरी दुःख की बदली'[8] 'विरह का जलजाल जीवन'[9] 'रात–सी नीरव व्यथा तम सी अगम तेरी कहानी'[10] आदि कविताओं में उन्होंने प्रकृति से सामंजस्य स्थापित किया है।

प्रकृति महादेवी वर्मा की हमेशा बहुत अधिक प्रिय रही है। प्रकृति को कवयित्री ने अपनी सहचरी माना है। 'यामा' में महादेवी वर्मा लिखती हैं कि ''छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब–प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुःख मे उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। 'निहार' में महादेवी प्रकृति के कठोर रूप का उल्लेख करती हैं –

''चुभते ही तेरा अरुण बान!
बहते फन–कन से फूट–फूट,
मधु के निर्झर से सजल गान,
इन कनक रश्मियों में अथाह,
लेता हिलोर तप सिंधु जाग,
बुदबुद से बह चलते अपार,
उसमें विहगों के मधुर राग।''[11]

'नीहार' महादेवी वर्मा का पहला प्रकाशित काव्य संग्रह है। झरनों के गीत, पक्षियों का मीठा राग, भंवरों की गुंजार, पत्तों का मर्मर गीत सुनकर मन से उत्सुकता, जिज्ञासा भर आती है। 'नीहार' में कवयित्री के गीत पीड़ा से परिपूर्ण हैं। महादेवी कहती हैं कि ''नीहार के रचनाकाल में मेरी अनुभूतियों में वैसी ही कौतूहल–मिश्रित वेदना उमड़ आती है, जैसी बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्य सुनहली उषा और स्पर्श से दूर सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है।''[12] कवयित्री के मन में प्रकृति के प्रति अज्ञात सत्ता की झलक पाना और उसके प्रति आसक्ति स्वाभाविक है –

''कैसे कहती हो सपना है
अलि! उस मूक मिलन की बात?
भरे हुए अब तक फूलों में
मेरे आंसू उनके हास।''[13]

कभी महादेवी वर्मा के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि –

''कौन पहुंचा देगा उस पार।''[14]

'नीरजा' महादेवी वर्मा का प्रकाशित काव्य संग्रह है। 'सान्ध्य गीत' में महादेवी वर्मा ने लिखा है, 'नीरजा'

मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेगी जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख–दुःख में सामंजस्य का अनुभव करने लगा। प्रथम बार खिलने वाले फूल को देखकर मेरे रोम–रोम में ऐसा पुलक दौड़ जाता था, मानो वह मेरे ही हृदय में खिला हो, परन्तु उसके अपने से भिन्न प्रत्यक्ष अनुभव में एक अव्यक्त वेदना भी थी। फिर वह सुख–दुःख मिश्रित अनुभूति ही चिन्तन का विषय बनने लगी और अब अन्त में न जाने कैसे मेरे मन ने उस बाहर भीतर में एक सामंजस्य–सा ढूंढ लिया है। जिसने सुख–दुःख को इस प्रकार बना दिया कि एक के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ दूसरे को अप्रत्यक्ष आभास मिलता रहता है।''[15] 'नीरजा' में प्रकृति का उपदेशात्मक रूप दिखाई पड़ता है –

''कंटकों की सेज जिसकी आंसुओं का ताज,
सुभग! हंस उठ, उस प्रफुल्ल गुलाब सा आज।''

'सान्ध्य गीत' महादेवी वर्मा का चौथा प्रकाशित काव्य संग्रह है। इसके गीत भी प्रकृति से इतने अनुप्रमाणित हैं कि लगता है जैसे प्रकृति ने इन्हें आत्मसात कर लिया हो। 'सान्ध्य गीत' में प्रकृति का नैसर्गिक सौन्दर्य चित्रण भी मिलता है। इसमें 'हिमालय' अपने पूरे स्वाभाविक सौन्दर्य के साथ दिखाई पड़ता है –

''हे चिर महान्!
यह स्वर्ण रश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास,
सेली बनता है इन्द्र धनुष,
परिमल मल मल जाता बतास।
पर रागहीन तू हिमनिधान।
नभ में गर्वित झुकता न शीश,
पर अंक लिए है दीन क्षार,
मन गल जाता नित विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश–भार!''
कितने मधु कितने कठिन प्राण!
टूटी है कब तेरी समाधि,
झंझा लोटे शत हार–हार,
बह चला दृगों सें किन्तु नीर,
सुनकर जलते कण की पुकार।
सुख से विरक्त दुःख में समान।''[17]

'सान्ध्य गीत' के सम्बन्ध में डॉ॰ नंददुलारे वाजपेयी ने लिखा है – ''सान्ध्य गीत' में दार्शनिक एकाग्रता उच्चतर हो उठी है ... इन गीतों की रहस्य भावना ही प्रधान स्थान पर गई है।''[18]

''प्रकृति महादेवी वर्मा के लिए श्रृंगार की वस्तु है, प्रियतम की ओर संकेत करने वाली सहचरी है, उसकी आत्मा की छाया है, ब्रह्म की छाया है, उसके जीवन का अपरिहार्य अंश है। अपने अभीष्ट की ओर बढ़ती महादेवी प्रकृति के कण–कण से परिचित होती हुई आगे बढ़ी है और सबका क्रन्दन पहचान कर आश्वस्त–सी हो गयी है।''[19]

निष्कर्ष

सारांशतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि यदि हम छायावाद को प्रकृति की चित्रशाला कहें तो कवयित्री महादेवी वर्मा छायावाद की अमर चित्रकार के रूप में जानी जाती हैं। शुरू से ही महादेवी वर्मा की दृष्टि प्रकृति के प्रति विस्मय भरी थी। प्रकृति उनके व्यक्तित्व, अनुभूति एवं जीवन का अंग बन गई। इसी कारण से 'सान्ध्य गीत' एवं 'दीपशिखा' के अधिकतर गीतों में प्रकृति अनुभूति का अंग बन कर आई है। देखा जाए तो दोपहरी का एक भी चित्र कवयित्री के काव्य में नहीं है। प्रभात, संध्या और रात – तीनों के ही चित्र या तीन के ही उपकरण अनेक भावों की व्यंजना के लिए आये हैं। ''इन दृश्यों के अंकन या इनके उपकरणों को भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने में महादेवी वर्मा ने वैभव विलास की दृष्टि रखी है।''[20] हम कह सकते हैं कि माँ सरस्वती की भक्त महान कवयित्री महादेवी वर्मा की काव्य रूपी वीणा से ध्वनित ये प्राकृतिक वर्णन हमेशा ही मानव–मन को उमंगित, हर्षित, उल्लासित, उत्साहित एवं तरंगायित करेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रो॰ प्रेम शंकर, भारतीय साहित्य के निर्माता : नन्द दुलारे वाजपेयी, पृ॰ 72*
2. *नंद दुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, पृ॰ 82*
3. *डॉ॰ भोला नाथ, आधुनिक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, पृ॰ 117*
4. *आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी, पृ॰ 44*
5. *यामा, 'अपनी बात' पृ॰ 06*
6. *यामा, पृ॰ 01*
7. *वही, पृ॰ 147*
8. *वही, पृ॰ 211*
9. *वही, पृ॰ 130*
10. *दीप शिखा, पृ॰ 36*
11. *रश्मि, पृ॰ 11*
12. *यामा, (नीहार भूमिका) पृ॰ 06*
13. *यामा, (नीहार) पृ॰ 12*
14. *वही, पृ॰ 30*
15. *सान्ध्य गीत (अपनी बात) पृ॰ 03*
16. *नीरजा, पृ॰ 201*
17. *सान्ध्य गीत (अपनी बात) पृ॰ 83, 84*
18. *महादेवी, सं॰ इन्द्रनाथ मदान, पृ॰ 36 में संकलित नन्द दुलारे वाजपेयी का निबन्ध*
19. *महादेवी की रहस्य–साधना, पृ॰ 76*
20. *इन्द्र नाथ मदान, महादेवी, पृ॰ 182*